अण्डे भी सीख सकते हैं खतरे को पहचानना

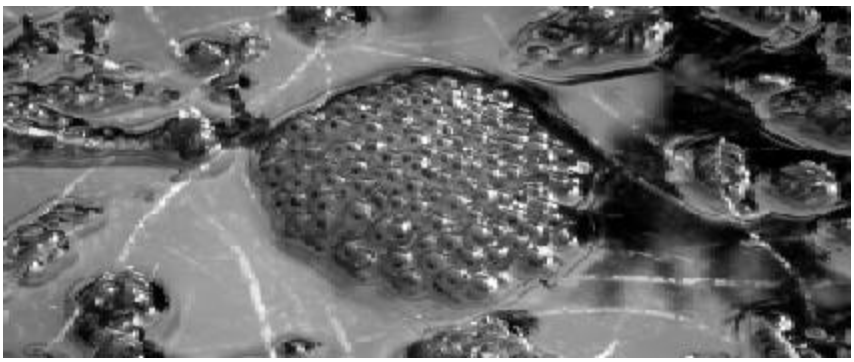

मेंढक के बच्चे अण्डे से बाहर निकलने से पहले ही खतरे को भांपना सीख लेते हैं। यह उन्हें शिकारियों से बच निकालने में मदद करता है। यदि जानवरों को कुछ गंध या आवाज़ें किसी खतरे के साथ आएं तो वे इन गंध और आवाज़ों को खतरे के संकेत के रूप में उपयोग करते हैं।

सैस्कैचवान विश्वविद्यालय, कनाडा के मॉड फेरारी और उनकी टीम ने एक प्रयोग किया कि क्या जंगली मेंढकों को यह सिखलाया जा सकता है कि वे शिकारियों की गंध को खतरे के रूप में पहचान सकें। सबसे पहले सारे अण्डों को शिकारी जीव की गंध से युक्त पानी में रखा गया। इन शिकारियों की गंध एक खतरा है। इसके तुरंत बाद आधे अण्डों को खतरे का इशारा सिखाया गया। इसके लिए उस गंध का उपयोग किया गया जिसमें कुछ मरे हुए टैडपोल्स को कुचला गया था। मरे हुए टैडपोल्स की गंध काफी विशिष्ट होती है।

जब इन दो तरह के अण्डों के अंदर से टैडपोल बाहर निकले तो उनके ऊपर उसी शिकारी जीव की गंध की बौछार छोड़ी गई। ऐसा करने पर देखा गया कि जिन अण्डों को मरे हुए टैडपोल की गंध से परिचित कराया गया था, उनमें से निकले टैडपोल्स तो अपने स्थान पर ही स्थिर हो गए। यह मेंढकों का शिकारियों से बचने का आम तरीका है। मगर जिन टैडपोल को भ्रूणावस्था में इस गंध का प्रशिक्षण नहीं दिया गया था, वे सामान्य रूप से तैरते रहे। यानी अण्डों के रूप में खतरे के साथ खतरनाक गंध का सामना होने पर टैडपोल खतरे के प्रति आगाह हो जाते हैं।

एक दूसरे अध्ययन में फेरारी की टीम ने उस स्थिति को देखा जब अण्डे के अंदर टैडपोल तक 'खतरे की महक' को इशारे के रूप में नहीं पहुंचाया गया। उन्होंने पाया कि इन टैडपोल्स ने मृत टैडपोल वाली गंध को नहीं पहचाना और उसे आने वाले खतरे से भी सम्बंधित नहीं कर सके।

उपरोक्त अध्ययन यह दर्शाता है कि कुछ जीव गर्भ से ही शिकारी की गंध को पहचान सकते हैं। टीम ने प्रारंभिक तौर पर यह विशेषता मछलियों में भी पाई है। तो अनुमान है कि यह खूबी अन्य जीवों में भी हो सकती है। ***(स्रोत फीचर्स)***